2/6/1966 गुरुवार प्रातः क्लास

...ये आत्मा बुलाती है अपने फादर को– ओ फादर! ओ बाबा! अभी फादर कहते हैं तब जब फादर का भी तो समझते हैं ना कि हम आत्मा हैं और वो ...। अभी आत्मा भी कोई चीज़ है तो सही ना, जिसमें ये पार्ट बजा(भरा) हुआ है, जो शरीर द्वारा बजाना होता है। वो समझते भी हैं कि बरोबर ये एक स्टार है जो चमकता है। आत्मा बड़ी छोटी है। ऐसे तो हो भी नहीं सकता है ना कि कोई ... आ करके, यहाँ तो ... निकल जावे, अगर बड़ी चीज़ होवे, अंगुष्ठे मिसल होवे और भृकुटी के बीच में आवे तो निकल जावे बाहर में। समझते भी हैं कि बरोबर एक स्टार है, जिसको आत्मा कही जाती है और अति सूक्ष्म है। बस, अति सूक्ष्म के लिए उनको स्टार...। स्टार तो बहुत छोटा होता है। ये स्टार्स तो बहुत बड़े हैं। ये तो बहुत ऊँचे हैं इसलिए वो छोटे दिखते, नहीं तो वो भी बड़े हैं; परन्तु यहाँ जो आत्मा है वो तो कहती है मैं बहुत छोटी हूँ। मैं बिल्कुल सूक्ष्म हूँ, ये भृकुटी के बीच में रहती हूँ और मैं हूँ सत,चित्,आनन्द स्वरूप। जैसे बाबा है तैसे मेरा ये स्वरूप है; परन्तु बाबा वहाँ है। उस समय में हम भी सत्,चित्,आनन्द स्वरूप। देखो, अभी तुम बाप के समान। बाप की महिमा करते हैं– सत् है, चैतन्य है और आनन्द और ज्ञान का स्वरूप है; क्योंकि ज्ञान से आनन्द है तो आनन्द का सागर है। फिर कहते हैं ज्ञान का सागर है। अच्छा, अभी तुम्हारी आत्मा भी उन समान बनी है, ज्ञान का सागर बनी है। देखो, बनते हो ना बच्चे। देखो, तुमको अभी सारी सृष्टि के आदि,मध्य,अंत का ज्ञान आ गया ना। और कोई मनुष्य मात्र की आत्मा को... अभी मनुष्य मात्र की भी आत्मा कहेंगे ना। कोई भी आत्मा में ये नॉलेज नहीं है जो तुम बच्चे सुनते हो; क्योंकि कोई भी ऐसा नहीं है। किसको भी कोशिश करनी है, सारा भारत ढूँढे, सारा विलायत ढूँढ़े, किसको भी ये मालूम नहीं है कि ये जो आत्मा है, जो 84 जन्म... किंतु 84 लाख कह दिया हुआ है। ये तो इम्पॉसिबुल एक बात है। कोई वर्णन कर न सके और सुनाया भी है कि बाप ने कहा है कि हे बच्चों, तुम अपने जन्मों को नहीं जानते हो। हम तुमको सुनाते हैं। अभी ये सुनते हुए भी गीता में, ऐसे पत्थर बुद्धि, जो ये नहीं समझते हैं कि जबकि जन्म सुनाना है, 84 लाख जन्म कोई सुनाय कैसे सकते हैं, कोई कैसे कह सकते हैं। तो सुनाने वाला क्या 84 लाख जन्म सुनाएगा? नहीं, वो तो स्कूल में एक सेकेण्ड में बताएगा ना कि तुम 84 जन्म कैसे लेते हो। अभी तुम बच्चे एक सेकेण्ड में अपने दिल में जानते हो यानी आत्मा जानती है कि बरोबर हमने 84 जन्म लिया हुआ है। सो भी किसने लिया है? हम अभी ब्राह्मण हैं। हम जो सो देवी–देवताएँ हैं, फिर ब्राह्मण भी कहेंगे। जैसे कहेंगे– ब्रह्मा, इसने भी 84 जन्म लिया है। विष्णु, उसने भी 84 जन्म लिया है; क्योंकि ब्रह्मा सो विष्णु, विष्णु सो ब्रह्मा। अभी विष्णु बन करके, 84 जन्म ले करके, फिर ये ब्रह्मा और सरस्वती बनते हैं। तो कितना ये समझ की बात है बच्चों को। अभी ये समझ बुद्धि में चाहिए ना यानी बाप बैठ करके बताते हैं और सो भी कहते हैं–बच्चे, मैं बच्चों को कल्प–2 हर 5000 वर्ष तुमको समझाता हूँ। 5000 वर्ष का ये सारा चक्कर है और शास्त्रों में देखो क्या लिखा है! तुम(ने) सुना रात को कि वो आर्य समाजी गया वहाँ प्रदर्शनी में। वो देखा, बोला– क्या 5000 वर्ष का लिखा है! शास्त्र कहते हैं सतयुग की ही आयु है सिर्फ 7 लाख वर्ष। तुमने ऐसे लिखा था ना? ये कहाँ है? क्या कहा था? (किसी भाई ने कहा– ये 5000...) तुम क्या लिखा है 5000, शास्त्र कहते हैं कि सतयुग है लाखों वर्ष का और तुमने कहाँ से ये लाया? अभी इनको कुछ पता तो है नहीं। गीता को भी कोई समझ नहीं सकते हैं। हूबहू अक्षर पूरे कहते हैं कि बच्चे, तुम अपने जन्मों को नहीं जानते हो। देखो, अभी कह रहे हैं ना बच्चे, तुम अपने 84 जन्म को नहीं जानते हो। हम 84 लाख...। तो किसको कोई याद भी नहीं पड़े, ज़रा भी याद न पड़े। 84 लाख जन्म कभी गिनती भी नहीं हो सके। या कल्प अगर इतना हो बहुत 7 लाख वर्ष...। तो बताओ, अगर 7 लाख वर्ष आदि सनातन देवी–देवता धर्म को लगे तो मनुष्य कितने हो जावें। चींटियों से भी, चींटियों क्या, बात मत पूछो एकदम, बहुत हो जावें। तो देखो, कुछ बुद्धि नहीं। अगर उनसे कोई भी थोड़ा वाद–विवाद करे तो लम्बी–चौड़ी बकवाद शुरू कर देवे। ये लोग बहुत ट्रां–2 करते हैं। तो उनको कुछ भी बोलना नहीं है। नहीं। ये समझना है; क्योंकि उनको समझने का है नहीं ना ; क्योंकि उनको आना ही है बिल्कुल पीछे। जब वो आर्य समाजी धर्म की होवे तब वो उनसे बैठ करके सीखते हैं। तुम बच्चों (ने) तो अपना वर्ण भी समझा कि बरोबर हम

ब्राह्मण। हम सो का अर्थ भी देखो। वो कहते हैं हम आत्मा सो परमात्मा, सो परमात्मा हम आत्मा। अभी ऐसे कहते हैं ना। अभी तुम बच्चों को हम सो, सो हम...। अभी हम सो देवता बनते हैं। हम सो क्षत्रिय बनते हैं। हम सो वैश्य बनते हैं। हम सो उस एक–2 वर्ण में इतने–2 जन्म लेते हैं। हम सो शूद्र, उसमें इतने जन्म लेते हैं। देखो, हम सो का अर्थ देखा कितना बड़ा है। फिर हम सो अभी ब्राह्मण बनते हैं। फिर हम सो ब्राह्मण, एक जन्म ब्राह्मणों का। इसको ही कहा जाता है हीरे जैसा जन्म; क्योंकि कौड़ी से हीरे जैसा बनते हैं। इसलिए ये वेस्ट ऑफ टाइम, यहाँ धक्का खाना, यहाँ बुद्धि को फैलाना मत करो। ये तुम्हारा बहुत उत्तम शरीर है। इससे तुम अपने स्वर्ग का वर्सा पा सकते हो। इसीलिए भटको मत। ये विख तो बिल्कुल नहीं पियो और अमृत ही पियो। अमृत क्या है? बोलते हैं ज्ञान लो। और फिर बिल्कुल अच्छी युक्ति कितनी सहज आती है। समझ में आता है बच्चों के कि बरोबर 84 जन्म वाले को जब समझाया जाए, तब वो समझाया तो जाएगा ना कि तुम पहले सतोप्रधान थे, सतयुग में थे। पीछे सतो बने, चाँदी की खाद पड़ी। एकदम पूरा हिसाब बताते हैं। जैसे सोने में खाद पड़ती है। अभी गवर्मेन्ट भी बोलती है कि 24 कैरेट नहीं बनाओ। उनमें खाद डालो और 14 कैरेट का जेवर पहनो। कहते हैं ना! तो देखो, जेवर किसको पसन्द नहीं आते हैं; क्योंकि भारतवासी ... समझते हैं। जबकि शादी करके आते हैं असुल में तो पक्का सोना पहनाते हैं। ये इनका एक स्वधर्म है; क्योंकि पक्का सोना. ... इन भारतवासियों का सोने के ऊपर क्यों प्यार है? अरे, क्या बात पूछो, ये तो सोने के महल बनते थे यहाँ भारत में। सोने की ईंटें थीं। जैसे ये ईंट देखा है? यहाँ पड़ी हुई है। ... जैसे तुम कहाँ भी जाओ, ईंटों का ढेर लगा रहेगा ना। दिल्ली में जाओ तो ईंटें ही ईंटें। तो वहाँ जाओ, उसमें सोने की ईंटें ही ईंटें, चाँदी की ईंटें। इसीलिए तुम बच्चों को बताया था ना, एक माया मछन्दर के खेल में कि वो शिष्य गया ध्यान में। वहाँ देखा– ओ होऽऽ! यहाँ तो बहुत ईंटें पड़ी हैं, थोड़ी तो गोथरी में डाल करके जावें। तो गोथरी में उठाकर डाला, ध्यान से उतरा, तो फिर यहाँ देखा कुछ भी नहीं है। तो अभी देखो आटे में लून कुछ न कुछ बात लगती है और बाप समझाते हैं कि वहाँ ये ऐसे ईंट थोड़े ही मिट्टी की और इनकी कोई बनती है। तो बच्चे अभी समझते हैं कि हम फिर अपने उस स्वर्ग में जाते हैं। तो जब बच्चों को ये याद आता है जावें, जब पति वगैरह ये सभी तंग करते हैं या खान–पान की तकलीफ ही होती है, तो छिकते हैं, माताएँ अंदर में बहुत रोती हैं– कब हम अपने सुखधाम जाएँगी। बाबा, जल्दी करो। बच्चे, जल्दी कैसे करें! योग से अपना कचरा तो निकालो ना। जा नहीं सकेंगे ना। इसलिए योग की यात्रा में रहो। काम करते हुए याद में रहो तो बच्चे...। देखो, धीर देते हैं ना। बच्चे, और कोई उपाय...। ये तुमको ज्ञान तो दे नहीं सकते हैं। तुम कहते भी हो कि हे पतित–पावन आओ, फिर तुमको ये गुरू कैसे पावन बनाएँगे या कैसे सद्गति देंगे? ये कितने गपोड़े मारते हैं! श्री–2 108 जगत्गुरू। जगत्गुरू का अर्थ ही है जगत की सद्गति करने वाला। देखो, कितनी शैतानी! बाप आ करके कहते हैं। अभी कहते हैं सर्व का सद्गति दाता एक और यहाँ कितने ये सन्यासी लोग हैं, ढेर हैं, सारे भारत में ढेर हैं ऐसे जो अपना नाम श्री–2 108 जगत्गुरू...। जगत् कहा जाता है विश्व को, सृष्टि को। अभी देखो कोई समझते हैं? बस हाँ, ये समझते हैं हाँ जगत्गुरू, जा करके उनके चरणों को पकड़ते हैं। नहीं तो है कोई सरकार? सरकार ही है डेविल वर्ल्ड। उनको समझावे, कौन उनको सम्भाले? तो बाप आकर समझाते हैं। तो देखो, कितना पाप है! ये भी सबसे पापआत्मा, हिरण्यकश्यप, हिरणाकश(हिरण्याक्ष); क्योंकि यहाँ की सब बात है ना। असुर यहाँ रहते हैं ना। ये भागवत में जो असुरों का, अकासुर–बकासुर वगैरह–2, सो भागवत में कहा है, इस समय की बात है, संगम की। कितने असुरों का नाम है– कंस–जरासिंधी वगैरह–2। तो ये सब नाम भागवत में लिखे हुए हैं ना। ये भागवत में लिखा हुआ है ना, कृष्ण ने स्वदर्शन से इन सबको मारा, फलाने को मारा...। तो इस समय की बात हुई ना। संगमयुग की बात हुई ना। तो संगमयुग पर अभी कृष्ण कहाँ से आएँगे, जो बैठ करके बोलेंगे या असुरों को मारेंगे। ये तो है ही सारी आसुरी दुनिया। यहाँ कोई कौन बैठ करके सन्यासियों को ही हाथ लगावे। ये तो कोई मारने–करने की तो बात ही नहीं है। बाप बैठ करके समझाते हैं बच्चों को और बोलते हैं बच्चे मैं कल्प–2 जब ये खास तुम ;

क्योंकि पहले नंबर तो तुम बनते हो पतित। जब ये सारा झाड़... तो पहले ज़रूर तुम पतित बनेंगे ना। पीछे सारा झाड़ पतित हो जाता है। जड़जड़ीभूत अवस्था को पाता है मनुष्य सृष्टि का झाड़ माना ये मनुष्य सृष्टि। यहाँ बाबा कभी भी कोई जनावरों की बात नहीं करते हैं। नहीं, मनुष्यों को ज्ञान सुनाएँगे। वो तो समझाते हैं, तुम समझते हो कि सतयुग में ये जो इतने पक्षी वगैरह, ये शेर, ये सभी जो कुछ कचरा है ना वो होगा नहीं; क्यों(कि) बड़े आदमी जो होते हैं ना, उनके पास बड़ी सफाई रहती है। उनके फर्नीचर, उनके रहने का स्थान। तो तुम बनते हो देवता। देवताओं के लिए तो सर्व वैभव चाहिए। कोई भी छी–2 चीज़ नहीं देख सकते हो। वहाँ कोई भी ऐसी चीज़ नहीं जिससे ....। तो ये जो भी मच्छर फलाना, ये बीमारियाँ–सीमारियाँ, गटर ये देखो क्या, कैसे रहना होता है। कोई जाए तो सही बॉम्बे और दिल्ली के तरफ..। ये गामरों में इतने गंदे नहीं रहते हैं। बड़े गाँव में देखो, जहाँ गटर, गंद है..... किनारे में और वो वहाँ रहते हैं बिल्कुल गंद। गामरों में तो किचड़ा इतना नहीं होता है, गटर आदि नहीं हैं। वो तो खुलासे गाँवड़े होते हैं बहुत, खाली गरीब होते हैं। बाकी इतनी गंदगी नहीं होती है। यहाँ तो ऐसी गंदगी, जहाँ जाओ तो कपड़ा देना पड़े और वहाँ ही वो बिचारे झुग्गियों में रहे पडे हैं।..ये गटर–वटर साफ करते हैं। क्योंकि बहुत मनुष्य हो गए हैं, रहने की जगह भी नहीं है एकदम और वहाँ तो तुम जानते हो कि एक–2 को कितनी जगह होगी। सारे विश्व के मालिक हैं, रहते हो भारत में और आदमी कितने सवेल में...। गाया जाता है, भगत भी गाते हैं– घट ही में ब्रह्मा, घट ही में विष्णु, घट में ही नवलख तारा। अभी ब्रह्मा, विष्णु और फिर ये सितारे। अभी ब्रह्मा सो तो विष्णु बन जाते हैं। तो विष्णु के साथ ये सितारे हैं। सतयुग में ये जब देवता बनते हैं तो बस इतने होते हैं वहाँ; क्योंकि पहले–2 झाड़ तो छोटा होता है ना। पीछे वृद्धि को पाता होता है। ये तो बुद्धि कहती है कि बरोबर ये इतने जो अभी अकिचार हैं, सतयुग में तो बहुत थोड़े होंगे और सभी मीठी नदियों के ऊपर होंगे। ये इतने जो केनाल्स निकले हुए हैं ना, ये डेम्स बनाकर और उनमें से पानी का केनाल... क्योंकि दूर–2 देश बस जाते हैं, तो नदियों में से वो बहुत केनाल्स निकालते हैं। ये तो तुम जानते हो कि बहुत...। जब तुम सिंध में भी थे या कहाँ भी, तो सिर्फ नदियों के ऊपर थोड़े ही चलती है। नहीं, केनाल्स निकालते हैं पानी फेंकने के। यहाँ केनाल–मेनाल कोई थोड़े (ही) होते हैं। पानी बहुत, मुट्ठी जितने मनुष्य। आज उनके लिए गंगाएँ–जमुना तो रहती हैं ना बड़ी–2 बिल्कुल। तो रहते ही हैं गंगा–जमुना इसके आस–पास। जो नदियाँ के पास मीठा पानी और सब कायदे मुजीब...; क्योंकि पाँच तत्व भी गुलाम बन जाते हैं देवताओं के; क्योंकि सतोप्रधान बन जाते हैं। तो कभी भी कोई भी बरसात बेकायदे न पड़े, कभी भी कोई नदी उथल न खावे, बिल्कुल सब कायदे मुजीब; क्योंकि नाम ही है स्वर्ग, तो पीछे क्या! और देखो, कौन राज्य करते हैं...! अभी जब कहते हैं सात लाख आयु स्वर्ग (की), तो ये स्वर्ग में राज्य कौन करते थे, भला ये तो बताओ। तो सात लाख वर्ष कोई स्वर्ग की राजाई थोड़े ही कर सकते हैं। कितने देवताएँ होते अगर सात लाख सतयुग की आयु होती। तो देवी–देवताएँ होते ना। अभी कहाँ, देवताओं को तो गुम हो गया एकदम। तो कितना गपोड़ा है, बिल्कुल गपोड़ा ... उनसे बैठो तो ये लोग बहुत डिबेट कर देंगे। आर्य समाजी...। जैसे मुसलमानों को कहा था ना अंग्रेज़ी में कि ये जो देवताओं के चित्र हैं, उनको तोड़ते हैं। वो आर्यसमाजियों का भी जो बड़ा था ना, वो देवताओं को नहीं मानते थे। देवताओं को नहीं मानने वाले हैं। तो आर्यसमाजी और मुसलमान दोनों कट्टर हैं। बिल्कुल कट्टर। वो भी कट्टर मजहबी पागल। ये आर्यसमाजी भी मज़हबी पागल। इनकी लड़ाई चलती है ये मुसलमानों से, उनसे। बस कोई मुसलमान बनेंगे, ये आर्य समाजी कूदेंगे उनको हिन्दू बनाने के लिए। दूसरा कोई भी नहीं, आर्यसमाजी ही वो कदम उठाते हैं कि अरे, इन मुसलमान को हम हिन्दू बनावें।...ये कट्टर बहुत हैं। तो अभी भी देखो तुम्हारे साथ, जो देवताओं का नाम लेते हो ना, कट्टर .. हैं...। इसलिए तुम्हारे साथ इनकी दुश्मनी है ड्रामा के प्लैन अनुसार...। तुम लोग को कोई किस्म का दुःख वगैरह नहीं होता है। ये अपना कल्प पहले वाला पार्ट बजा रहे हैं। ये तो कोई हर्जा नहीं है। ये विघ्न तो पड़ेगा यज्ञ में। बाप ने आते ही कहा है– बच्चे, इस रूद्र ज्ञान यज्ञ में अनेक प्रकार के असुरों के विघ्न पड़ेंगे। ये कचड़ा फेकेंगे।

आगे मनुष्य समझते हैं कि कोई असुर होता है, ऊपर से जा करके छेने... वो फेंकते होंगे यज्ञ में। ऐसे–2 मनुष्य समझते हैं; परन्तु नहीं। ये विघ्न अभी तुम देख रहे हो कि कल्प पहले मुआफिक जब बाप आते हैं, आ करके स्थापन करते हैं, तो कितना अबलाओं के ऊपर विघ्न, नगन होने का ही विघ्न। तो देखो, दृष्टान्त दिखलाया हुआ है बरोबर और ये अबलाओं के ऊपर अत्याचार होंगे। बरोबर पाप का घड़ा भरेंगे। ऐसे कहते तो रहते हैं ना बरोबर। तो देखो, पाप का घड़ा भर रहा है एकदम अच्छी तरह से; क्योंकि इन अबलाओं के ऊपर अत्याचार होते हैं। बाबा तो कहते हैं बच्चे, थोड़ा–बहुत अत्याचार तो सहन करना पड़ेगा ना। अत्याचार के समय भी तुम मुझे याद करो और अपने वर्से को याद करो। भले कोई मारेंगे, पीटेंगे..। उसी समय भी जब कोई मार खाते हैं– हे शिवबाबा! बस। हे बाबा! वो लोग कहते हैं ना, जब दुःख होता है तो कहते हैं– हाय राम। अभी तुमको ज्ञान मिला हुआ है। वो तो ऐसे ही ... कह देते हैं– हाय राम! दुःख होता है, कोई मारते हैं किसको। हाय खुदा या ओ गॉड– ऐसे कह देते हैं। किसको फाँसी पर भी चढ़ाते हैं ना, तो पादरी लोग आते हैं, उसको जाकर कहते हैं– अब गॉड फादर को याद करो। ऐसे नहीं कहते हैं क्राइस्ट को याद करो। उसको भी ऐसे ही कहते हैं गॉड फादर को याद करो। तो सब कोई इशारा उनका देते हैं। इतना तो मोस्ट लवली है जो सब उनको ही पुकारते रहते हैं। पुकारते कौन हैं? ये अभी तुम बच्चे...। तो आत्मा ही पुकारती है। ये जो भी कुछ है सब आत्मा ही...। देखो, बैरिस्टर बनती है आत्मा। जज बनती है आत्मा। ये बैरिस्टर सभी आत्मा बनती है ना। आत्मा कहती है कि मैं ये शरीर ले करके...। अब परन्तु अज्ञान काल में ये कुछ पता नहीं है; क्योंकि आत्मअभिमानी नहीं हैं, देहअभिमानी हैं। अब आधाकल्प देहअभिमान जो हुआ है, वो एक जन्म, ये अंतिम जन्म में देहअभिमान निकल करके देहीअभिमानी बनें, इसमें मेहनत बहुत है। समझा ना। इतने जन्म लिए हैं। 63 जन्म देहअभिमान में ही रहे हो। अभी 63 जन्म की जो आदत है देहअभिमान की, वो एक जन्म में मिटानी है। क्यों हमको मिटानी ज़रूर है कोशिश कर–करके? क्योंकि हम जानते हैं कि अभी देहीअभिमानी बनने से, उफ! हम स्वर्ग के मालिक बन जाएँगे। देखो, कितनी प्राप्ति है! तो कोशिश बहुत चाहिए ना। रात–दिन कोशिश। जैसे मनुष्य रात–दिन धंधे की कमाई करने के लिए मेहनत तो करते हैं ना। अगर मनुष्य दिन में कमाई करने वाले हों, दुकान चलता रहता है, भले जवाहरात का हो, कोई का भी हो, आमदनी होती रहती है। आमदनी में कभी भी मनुष्य को पिनकी नहीं आएगी। आमदनी में कभी मनुष्य को उबासी नहीं आएगी। याद रख देना। भले कितना भी थक जाए। तो आमदनी होती है ना। भले रात को भी पैसा मिलता जाए, चीज़ बेचते जाए, नींद नहीं आएगी, उबासी नहीं आएगी, थक नहीं होगा; क्योंकि पैसा मिलता रहता है ना। तो खुशी होती रहती है। पैसा मिलने की खुशी रहती है। इसमें थकने की क्या बात है! देखो, बाबा अनुभवी तो है ना। बाबा ने अनुभवी रथ लिया है ना। बाबा रात को जागे हैं। आगे रात को स्टीमर आते थे। वो तो रात को दुकान खोलते थे और स्टीमर के सोल्जर वगैरह ये सब आते थे, आ करके माल लेते थे और करोड़ रुपये ... डेढ़ लो, दो लो, ठोकते जाओ। जब तलक उनका खीसा(पॉकेट) खाली न करे, उनको छोड़े नहीं। ये देखो, ये व्यापारी का अनुभव। सब व्यापार किया हुआ है। ऐसे नहीं कि कुछ नहीं। बाबा ने चुन करके ड्रामा के अनुसार ऐसा कोई लिया है.. सब...। गाँवड़े का छोरा भी तो इनको ही कहते हैं ना। तो ये छोरा भी तो था ना...। बाबा ने बोला ना– 10 आने मन ये बाजरी, 11 आने ज्वार, मुझे पक्की याद है एकदम। 7/8 दिन दुकान खोलते थे। क्यों? केनाल्स खोदते थे, तो जो मजदूर आते थे, आकर के छुट्टी मिलती थी, गाँव में आए थे और आते थे ये अन्न लेने के लिए। हम खुद छोटा कोई 8 वर्ष का होगा उस समय में। तो गामरे का छोरा था ना; पर ये तो गामरे का छोरा नहीं है ना। ये तो विश्व का मालिक है ना; परन्तु ये तुम जानते हो अभी पूरा ही पूरा ये सो बनते हैं, सो गाँवरे का छोरा बना था। देखो, पूरा एकदम बाबा बता रहे हैं। टोपी भी नहीं पूरी, जूती भी नहीं पूरी। तो अभी अनुभव सब। कहाँ बाजरी 4 आना कमाना, कहाँ ये चढ़ते–3 सब व्यापार करते, ये पीतल, रेशम फलाना। ऐसे कोई व्यापार नहीं है शायद जो मेरे हाथ से नहीं निकला होगा, तहाँ कि वो जवाहर। अभी उन जवाहर के बाद फिर ये सच्चे जवाहर।

व्यापार भी सबसे अच्छा गिना जाता है ना जवाहरात का। रॉयल व्यापार एकदम। सो भी राजाओं–महाराजाओं फलानों से। ये जितना अनुभवी है गाँवड़े से, ये दुकान चलाना, ये राजाओं से बात करना, किंग्स से बात करना, ये जर्मन के प्रिंस वगैरह जो आते थे, ये वाइसराय वगैरह, वाइसरायों के घर में बाबा ऐसे जाते थे जैसे उनका बच्चा है। कमाण्डर एण्ड चीफ क्या समझते हो! परमिट बिगर .....। नहीं, हम परमिट ले लेते थे। हम जाकर खूब घूमते, चक्कर लगाते थे। तो देखो, रथ भी तो बोलते हैं ना कि ये कितना अनुभवी है सब बात से। पिछाड़ी में जवाहरात, अभी फिर सच्ची जवाहरात। इसको कहा जाता है अविनाशी ज्ञान रत्न। जितना–2 जो अच्छी तरह से बुद्धि में धारण करते हैं...। ये अविनाशी ज्ञान रतन हैं ना। ये है एक–2 रतन। तुम धारण करती हो। तुम पद्मपति बनती हो। वो जो जड़ रतन हैं, जिसको ये लोग कहते हैं, तुम धारण करते हो, पतित बनते हो, ये कमबख्त बनते हो देखो। ये शास्त्र पढ़ते–2 दुर्गति को पाए हैं ना। क्या उनको जवाहर कहेंगे? रत्न कहेंगे? तो बाबा अभी कहते हैं– देखो, बाप बैठकर तुम बच्चों को...। शिवबाबा। उसको कहा ही जाता है रत्नागर, जादूगर और उनसे कोई विरला व्यापारी सौदा करे, सौदागर। देखो, बाप की महिमा और ऐसे को कह देना सर्वव्यापी, ये क्या बात है देखो! इतनी महिमा– सौदागर, ज्ञान का सागर, सुख का सागर, शांति का सागर, रत्नों का सागर, जादूगर वगैरह–2, कितनी महिमा करते हैं। पतित–पावन, दुःख हर्ता, सुख कर्ता। अरे, इतनी महिमा और सर्वव्यापी! सारा खेल ही खलास एकदम बिल्कुल ही। इतनी महिमा और इतनी ग्लानि। बस, कुत्ते में, बिल्ली में, ठिक्कर में, भित्तर में। देखो, ये मनुष्यों की कितनी हालत हो गई है ये भक्तिमार्ग में। बाप तो कहते हैं ना बच्चे, भक्ति जब पूरी होती है तब भगवान आते हैं। भक्तों का रक्षक आ करके...। सो तो तुम करते हो सबसे बड़ी भक्ति और बहुत भक्ति कौन करते हैं सो भी सिद्ध हो जाता है। भक्ति तो सभी करते हैं ना, ढेर हैं, अथाह हैं। सबसे जास्ती भक्ति कौन करते हैं? जब भक्तिमार्ग शुरू होता है, शिव की पूजा भी तुम करते हो। जो पहले–2 शिव की पूजा करनी शुरू कर देते हैं। शिव तो है शुरुआत। देवताएँ सो जब वाममार्ग में जाते हैं, वही यहाँ आकर पहले–2 ब्राह्मण बनते हैं और अपना वर्सा बाप से लेते हैं। आगे पूजा करते थे, अभी बाप से पूज्य बनने के लिए वर्सा ले लेते थे। तो रावण ने पुजारी बनाय दिया। अब बाप फिर आ करके पूज्य बना रहे हैं। देखो, अभी चक्कर को तो अच्छी तरह से समझ गए हैं ना नंबरवार पुरुषार्थ अनुसार। अभी ये ज्ञान दूसरा तो कोई दे न सके ना। ये तो है ही भगवानुवाच। भगवान है एक, दो/तीन तो होते ही नहीं हैं। श्रीमत भगवानुवाच श्रीमत भगवत गीता। भगवानुवाच्य, अभी होना चाहिए शिव भगवानुवाच्य। ठोंक दिया कृष्ण भगवानुवाच गीता को। देखो, कितना फर्क हो गया! बाप जो उनकी भी सद्गति कर रहे हैं, जो कृष्ण 84 जन्म भोगकर दुर्गति को पाया है, भिन्न नाम–रूप धारण किया है, उनको फिर सद्गति को कह रहे हैं, नाम ठोंक दिया उनका। देखो, कितना गीता को खण्डन...। अभी ये तो कोई जानते नहीं हैं। ये तो ड्रामा के प्लैन अनुसार फिर भी ऐसा ही होगा। फिर भी ये गीता का नाम बदल ही जाएंगे। भक्तिमार्ग है ही दुर्गतिमार्ग। कोई भगत को कहो कि ये भक्ति दुर्गति है। लड़ पड़ते हैं एकदम। बोलते हैं, ये तो कोई नास्तिक है। यानी भक्ति दुर्गति है? भक्ति जिससे भगवान मिलता है और ये कहते हैं भक्ति है दुर्गति। अरे हाँ–हाँ, ये तो ठीक है, जब ये भक्ति करते हो, तुम्हारी दुर्गति होती है, पतित होते हो बिल्कुल, तभी तो कहते हो ना– हे पतित–पावन, आओ। तो भक्ति है, पतित है ना। भगत पतित हैं इसलिए पुकारते हैं ना पतित–पावन को। तो बोलता है– भक्ति अच्छी! बाप पावन बनाते हैं, फिर ये रावण आकर तुमको पतित बनाते हैं। तो क्या ये पतित माना भक्ति ये अच्छी हुई? ये तो हो भी नहीं सकता है। तो देखो, इसमें समझने का बुद्धि चाहिए। तो देखो, तुम बच्चे अभी आए हो। तुम ये जानते हो कि वाह! अभी तो हम ये गुरूओं की जंज़ीरों से छूट गए। ये गुरू भी आसुरी मत पर हैं। तो सबकी मत से, कोई की मत नहीं सिवाय एक बाप की मत। तो श्रीमत माना श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ बनेंगे। ये कैसे बने? ये कोई एक राजा–रानी थोड़े ही थे। सारी स्वर्ग की राजधानी ये किसकी मत पर बनी है? कोई तो इनको मत दिया होगा ना। कभी लड़ाई–वड़ाई तो नहीं किया है। ये तो झूठ लिखा हुआ है कि दैत्य और देवताओं की लड़ाई लगी। सो दैत्य

ठहरा कलहयुग में, देवता ठहरे सतयुग में। इनकी लड़ाई कैसे लग सकती है! हो सकती है? वो देवता भी तो मनुष्य हैं ना। वो प्युरिटी में पवित्र, नॉनवायोलेन्स। अहिंसा परमो देवी–देवता धर्म। सो फिर ये हिंसक असुरों से लड़ाई कैसे करेंगे! देवताएँ कोई लड़ाई कर सकते हैं? और कहाँ करें, वो सतयुग, ये त्रेता। ये खतम ही हो जाते हैं, आई मिन ये कलहयुग। ये तो खतम ही हो जाते हैं। जब देवताएँ होते हैं, असुर कहाँ से आएँ? या असुर हैं, तुम देखते हो यहाँ कहाँ हैं देवता कोई ? तुम तो ब्राह्मण हो ना। देवता कहाँ हैं जो असुरों से लड़ेंगे! तो कितना रात–दिन का फर्क है बात का। तो बाप आकर बोलते हैं– देखो, कितना फर्क है तुम्हारे इन शास्त्र वगैरह में। शास्त्रों से ही तुम्हारी दुर्गति पूरी हुई है, होने की है। सबकी, सर्व की। तभी कहते हैं सर्व का सद्गति दाता एक। तो अभी तुम जानते हो कि बाप जब आते हैं, वो आ करके स्वर्ग की स्थापना करते हैं। उनको कहा जाता है हैविनली गॉड फादर। अक्षर बहुत अच्छा है। हैविन स्थापन करने वाला गॉड फादर। तो हैविन स्थापन करते हैं तब जबकि हेल है। तो हेल का विनाश, हैविन की स्थापना– ये तो गायन है बिल्कुल ही। ब्रह्मा द्वारा हैविन की स्थापना और शंकर द्वारा हेल का विनाश। ये तो समझ में आता है ना, सतयुग जब था, इनका राज्य था, तो बरोबर बस इनका ही राज्य होगा ना। वहाँ तो असुर की कोई भी बात नहीं है ना। अभी तुम बच्चों को मालूम पड़ा कि यही देवताएँ जो फिर जा करके असुर बनते हैं। आसुरी सम्प्रदाय। दैवी सम्प्रदाय सो आसुरी सम्प्रदाय। आसुरी सम्प्रदाय सो फिर दैवी सम्पद्राय। आसुरी सम्प्रदाय, दैवी सम्प्रदाय कैसे बनती है, वो तुम बैठ करके समझते हो। तुम्हीं समझो और न जाने कोय। जो–2 आते जाते हैं। देखो, ये जबलपुर से। कोई सेन्टर था क्या जबलपुर में? जबलपुर में ये बच्चे क्या जानते थे कुछ भी, इनको क्या मालूम था। जब सेन्टर खुला तो देखो कितने बच्चे ब्राह्मण बन करके और अच्छी–2 बच्ची, बस। देखो, ये बच्ची भी शायद जबलपुर की थी। बस, कहाँ बाबा, जल्दी ये खतम हो, हम चलें आपके साथ, अपने शांतिधाम में और फिर सुखधाम में। अभी यहाँ बहुत दुःख है। हमारा पति हमको बड़ा तंग करता है विख के लिए। बच्ची, तुम एक थोड़े ही हो। तुम सभी द्रौपदियाँ हो और ये सभी दुःशासन हैं जबकि आसुरी सम्प्रदाय है। अभी तो बाप आए हुए हैं। एक की तो बात है नहीं। बाबा के पास आ करके बहुत ही रोती हैं– बाबा, ये दुःशासन हमको नगन कर, हमको मारते हैं, बहुत पीटते हैं, बाहर निकाल देते हैं। बोलता है चली जाओ यहाँ से। बाबा, अब हम क्या करें! बाबा कहते हैं आया है शरणागत देने के लिए। शरण पड़ी मैं तेरी; परन्तु बाबा कहते हैं– बच्चे , ये फिर बाल–बच्चे वहाँ याद आएँगे और फिर तुमको बाबा की गोद लेने से तो याद आएँगे। अब जब एक की शरण लेती हो, तो तुम्हारा गायन है– बाबा, जब तुम आएँगे तो हम आपकी बनेंगे। हमारा तो आप बनेंगे, दूसरा न कोई। अभी दूसरा न कोई का अर्थ ये नहीं है कि तुम सब आ करके यहाँ बैठ जाएँगी। नहीं, ये तो गृहस्थ–व्यवहार में रह करके फिर तुमको याद करना है। बाबा, ये सब तो मेरे हैं नहीं ..... जानती हूँ कि हमारा देह....सब विनाश हो जाएगा। घर में बैठकर...– बाबा, मैं तो तेरी हूँ। तो बाबा कहते हैं ऐसे बैठकर घर में याद करो– बाबा, अभी तो हम तेरी हूँ। अभी मैं कोई भी पाप कर्म नहीं करूँगी। इसमें भी जो पाप सबसे बड़ा पाप है, जिससे पतित बनते हैं, वो कोई क्रोध नहीं है। नहीं, ये विकार में ही नहीं जाएँगी। काम महाशत्रु है। देखो, बाप कहते हैं ना। ऐसे नहीं कहते हैं क्रोध शत्रु है। नहीं, काम शत्रु है। काम की आशा पूरी न करने से फिर क्रोध आता है, तुमको मारते हैं। तुम अबलाओं के ऊपर। ये तो शुक्र करो जो बाँधेली हो और पवित्र बनने के लिए मार खाती हो। ये तो अहो सौभाग्य! क्योंकि तुम वही कल्प पहले वाली हो जो बैठ करके बाप से महारानी, पटरानी बनती हो। तो थोड़ा सहन किया, कोई ने मारा विख के लिए या जबरदस्ती किया तो उनके ऊपर पाप है, कोई तुम्हारे ऊपर थोड़े ही है। ये तो सब बना है, कोई डरने की बात नहीं है। भीख माँगते हैं। तो देखो, मिनिस्टर को बैठा दिया है काँटो पर। वो साधु लोग बैठते हैं ना, कीले का तख्त बनाय करके। कभी देखा है! रमेश? (भाई ने कहा– खटोला तख़्त) ये संदली बनाते हैं ना, उसमें कीला लगाते हैं। जबकि वहाँ जाओ कुम्भ के मेले पर। ये सभी खेल कुम्भ के मेले पर होते हैं। पीछे वो भीख माँगते हैं। तो देखो, ये भी अभी काँटे के ऊपर बैठे हैं। ये काँटे

का, फॉरेस्ट ऑफ थॉर्न्स है। प्राइम मिनिस्टर यानी गवर्मेन्ट कहाँ देखो भीख माँग रही है और साहब लोग उनको कणा–दाना दे रहे हैं। गवर्मेन्ट विलायती। तो कोई डरने की तो बात नहीं है। ये तो फेंकते हैं ना और क्या कर सकते हैं। ये कहाँ से निकाला? ये निकाला ही अखबारों से। अखबार में पड़ा हुआ था और हम....यहाँ भी डाल दिया। तो एग्ज़िबिशन में ये भी दिखलाते हैं उनको देखो, ये भारत का ये हाल ; परन्तु जो भी सूर्यवंशी दैवी बुद्धि वाले होंगे ना, जो भी ब्राह्मण धर्म वाले होंगे, वही समझेंगे। दूसरा देखेगा हाँ, ये है तो बहुत राइट बात, बस खलास। इतना ही करेंगे ये तो है बहुत राइट बात। इसलिए अभी बाबा वो कोर्ट ऑफ आर्म्स भी बनाय रहे हैं। ये यादव,कौरव,पाण्डव क्या करत भये? तो बाबा यादवों का, यूरोपवासियों का भी कोर्ट ऑफ आर्म्स बनाय रहे हैं और कौरवों का भी बनाय रहे हैं। ये जो इनके हैं शेर और डाल दिया है सत्यमेव जयते, चर्खा। अभी चर्खा तो नहीं है ना। ये तो चक्र है। तो उसने वो चरखा रख दिया है और नीचे में लिख दिया है ऐसे जनावार और चरखा और सत्यमेव जयंती। विजयन्ति। अभी इसमें विजयन्ति या जयन्ती की तो कोई बात ही नहीं है। तो इनके बाद में फिर ये आएँगे अभी सच्चे। तो वहाँ लिखा हुआ है– विनाश काले प्रीत बुद्धि सत्यमेव विजयन्ति और उनके लिए लिख दिया है– सत्यमेव विनश्यन्ति; क्योंकि विपरीत बुद्धि। विपरीत बुद्धि भी बड़ी विपरीत बुद्धि। सिद्ध करके बताते हो। तुम गालियाँ देते हो भगवान को, इसलिए तुम्हारी विपरीत बुद्धि। तुम कहते हो, विपरीत बुद्धि उसकी होती है जिसको गाली दी जाती है। दुश्मन, कड़ा दुश्मन। क्या तुम कहते हो कि वो पत्थर–2 में, ठिक्कर–भित्तर–2 में, कुत्ते का बच्चा, उल्लू का बच्चा, पाजी का बच्चा। ये गाली देते हैं गंदी–2। हूबहू जैसे आजकल मनुष्य गाली देते हैं बच्चों को– ऐ कुत्ते का बच्चा, ऐ उल्लू का बच्चा, ऐ सुअर का बच्चा। तैसे बोलता है– मुझे तुम गाली दे दिया है। जो मैं तुम भारतवासियों को.....। बोला, ये वण्डरफुल खेल है। ये बाप बैठ करके वण्डरफुल बातें सुनाते हैं। कृष्ण बिचारा, वो तो और उस बिचारे के ऊपर कितनी... कृष्ण बच्चे को 108 रानी, 8 रानी, भगाया, ये किया, मटकी फोड़ा। उनको कोई मक्खन की परवाह या कोई बात की परवाह और फिर सर्प पर डांस किया कालीदह में और उसको डस दिया, काला पड़ गया। ये क्या है! ये तो सभी ग्लानि–ग्लानि। रामचंद्र के लिए भी ग्लानि। सीता भग गई, ये बंदरों का लश्कर लिया। क्या कभी कोई मनुष्य बंदरों का लश्कर लेते हैं? तो देखो...ये पादरी लोग हैं ना, ये लोग लेक्चर देते हैं। बोलते हैं, तुम्हारे भगवान रामचंद्र की सीता चुराई गई और तुम कहते हो उन्होंने बंदरों का लश्कर लिया, ये क्या तुमको शर्म नहीं आती है! देखो, हमारा क्राइस्ट कैसा फर्स्टक्लास है, ये है, वो है। हमारे पास कितना धन है! तुमको मिलता है 10 रुपया, हम देते हैं 100 रुपया पगार। वो कितने के कितने कनवर्ट करते थे। ये बड़ा लेक्चर करते थे। बाबा ने बहुत सुना हुआ है कि तुम्हारा ये राम ऐसे, तुम्हारा कृष्ण ऐसा। तो ग्लानि हुई ना। .. गाया जाता है भारतवासियों ने, जो अपन को हिन्दू कहलाने में आते हैं, अपने आप को ही चमाट मारी है। ये सभी लिख करके शास्त्रों में. ..। तो बाप बैठ करके समझाते हैं बच्चों को। अरे, आज गुरुवार है क्या? अभी बाबा बंद करते हैं। मीठे ते मीठे, स्वर्ग का मालिक बनाने वाला, वो सिर्फ कहते हैं बच्चों को कि बच्चे, ये अंतिम जन्म है। मरना भी ज़रूर है तुम बच्चों को। सबको वापस जाना है। तो मरने के पहले तुम तमोप्रधान से सतोप्रधान बनकर हमारे से बादशाही ले लो। युक्ति बहुत सहज बताता हूँ। भई मेहनत होगी ना ; क्योंकि माया पर जीत पहननी है। तो माया विघ्न डालेगी। और कोई लड़ाई–वड़ाई नहीं है असुरों और दैत्यों(देवताओं) की। विघ्न डालेंगे। विघ्न को सहन करना पड़ेगा। समझा ना। खाली विघ्न को।....बहुत तूफान आएँगे। बस इतना आएँगे, अच्छा, बुड्ढा होगा 80 वर्ष का, तो भी उनको विघ्न ऐसे आएँगे, बस जैसे कि जवान बन गया। कोई स्त्री देखेंगे, ये देखेंगे, बस लटकूँ, चटकूँ। ऐसा–2 आएगा। बोलते हैं, खबरदार रहना। हाथ भी नहीं लगाना। कर्मेन्द्रियों से कोई भी विकर्म नहीं करना। मंसा बहुत तूफान आएँगे गिराने के लिए, बहुत आएंगे ; परन्तु कर्मेन्द्रियों से कोई भी विकर्म नहीं करना। नहीं तो सौणा पाप पड़ जाएगा। फिर बच्चों के लिए सौणा पाप बढ़ जाएगा। तो फिर वो गिर पड़ते हैं। न बताने वाले गिर करके खतम ही हो जाते हैं। तो बताना चाहिए ना! बाप को सब कुछ बताना चाहिए– बाबा, हमारे से ये भूल हो गई। अगर नहीं बताएँगे

तो मल्टीप्लीकेशन होती जाएगी। इसलिए फट से बता देना चाहिए। अच्छा! ये ले आओ बच्चे। ...होनी चाहिए, हमको बेहद का बाबा फिर से मिला है। उनसे हम वर्सा ले रहे हैं। बड़ी कमाई, बड़ी कमाई, बड़ी कमाई। जो ...ख़ज़ाना आता है मनुष्यों के पास, पदम देखो। बिरला बहुत साहुकार है, जिनके पास करोड़ों रुपया है। अभी खा सकेंगे कोई? बाकी कितना है! ये 2/4 वर्ष के अंदर बड़ा हंगामा शुरू हो जाएगा, बात मत पूछो। बहुत हंगामा। अभी देखो, तुम अख़बारें नहीं पढ़ते हो, क्या हो रहा है बाहर में। हैण्ड्स अप कराया और वहाँ ... के ऊपर लड़ाई लगती है, उन्होंने डराया कि हैण्ड्स अप, नहीं तो हम चलते हैं अपना भी ले करके। तो बॉम्ब का डर तो अभी बहुत है सबको। ये भी बच्चे समझते हैं कि क्या–2 सुनते हैं। ऐसे–2 निकाले हैं, जो बस जाएँगे और भस्म कर देंगे। तो ये सभी ड्रामा में नूँध है, सब बात की। जो कुछ ये कर रहे हैं, नथिंग न्यू। ये तो कल्प–2 ये सभी इन्वेन्शन करते हैं विनाश के लिए। तो बनाते ऐसी चीज़ें हैं जो मनुष्य को तकलीफ न हो और झट वो...। देखो, गैस भरते हैं ज़हरी। बस, हवा आई और वहाँ खतम हो जाएँगे। कोई देरी लगती है! तो इन बॉम्ब्स में सब ये ज़हरीली चीज़ें पड़ी हैं, जब फेकेंगे तो झट मर जाएँगे। फिर थोड़े ही अस्पतालें रखी हैं जिसमें वो दवाइयां होंगी या ये होंगी। अभी कितना फर्क है! वो पावरफुल हिरोशिमा का अभी भी कहते हैं कि भई, हिरोशिमा में फलाने ने ये किया था, ये किया था। अभी क्या–2 बना रहे हैं। बाकी अभी और भी तो थोड़ा समय है ना। बस, इन्वेन्शन चल रही है कि हम कैसे इतना में एकदम खतम करें। ये ड्रामा में नूँध है ना। खतम होने का है। तो तुम बच्चों को मालूम होते हुए बाप से अपना वर्सा ले लेना चाहिए खतम होने के पहले। कर्मातीत अवस्था को पहुँचने का है। तो जितना–2 याद में रहेंगे इतना खुशी का पारा ऑटोमैटिकली चढ़ेगा और बाबा कहते हैं जब विनाश शुरू हो जाएगा ना, तुम लोग बहुत साक्षात्कार करेंगे अपने सुखधाम का, अनेक प्रकार का। मालूम पड़ जाएगा बच्चों को कौन नंबरवार पास होने वाला है। अरे, इम्तहान की पास ही तब होती है जब इम्तहान का समय होता है। तब मालूम पड़ता है उन बच्चों को हम कितने मार्क्स से पास होंगे। पीछे ट्रान्सफर होते हैं। ये भी ऐसे ही है। चलो बच्ची। आओ बच्चे।

हैलो! शिवबाबा को याद करने से तुम्हारी कट सब निकल जाने वाली है। और कोई दूसरा उपाय नहीं है। एक ही है जो एक उपाय बताते हैं और तुम्हारी एक बहुत–3 ही प्राप्ति है। 21 जन्म स्वर्ग की प्राप्ति है। तुम बच्चे जानते हो तब यहाँ आते हो। अगर ये निश्चय न होता तो यहाँ कोई आता नहीं। माताएँ–कन्याएँ भी कर सकती हैं। अब ये बच्चों का, बस, अभी हम रूहानी सोशल वर्कर बनेंगे। जिस्मानी तो बहुत हैं। जिस्मानी तो है ही है। एक/दो की जिस्मानी सेवा तो सभी करते हैं। घर वाले भी करते हैं और ये नया नाम निकाल दिया है। गवर्मेन्ट से तलब मिलती है सोशल वर्कर को ये करो, ये करो। वो सब करते हैं। हैं तो सभी जिस्मानी सेवाएँ....। अब रूहानी करनी है। रूहानी सोशल वर्कर करने से भारत को स्वर्ग बनाने में मदद करेंगी। अभी जिस्मानी की कोई बात नहीं। अब ये रूहानी। बाप रूहानी है ना। शिवबाबा है रूहानी सोशल वर्कर। सोशल यानी सारी सोसाइटी वर्ल्ड की, उन सबकी सेवा करते हैं। है बरोबर ऐसे! बाप रूहानी सोशल वर्कर। तुम भी अभी रूहानी सोशल वर्कर; क्योंकि आत्माओं को ही, ये तमोप्रधान बन गए हैं, उनको सतोप्रधान बनाने के लिए युक्ति बताना कि मन्मनाभव, मद्याजीभव। अक्षर ही दो हैं। सिर्फ उनको समझाना है कि वो कृष्ण ने नहीं कहा है, बाप ने कहा है; क्योंकि लड़ाई लगती(लगी थी)। सबको वापस जाना था। तो बोलते थे, वापस ऐसे नहीं आ सकेंगे जब तलक पवित्र न होंगे। तो पतित–पावन कोई कृष्ण को नहीं कहा जाता है। हाँ बच्ची! (रिकॉर्ड बजाः– ओम् नमः शिवाय.....)

और सभी ईश्वरीय रूहानी सर्विस सेन्टर्स के ब्रह्मा मुखवंशावली ब्राह्मण कुलभूषण स्वदर्शनचक्रधारी सभी सर्विसएबुल मीठे–2 बच्चों प्रति बापदादा का आज गुरूवार के दिन यादप्यार और गुडमॉर्निंग।